एचडीएफसी इर्गो ने रबी सीजन में मध्य प्रदेश के किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना लागू की

HDFC ERGO

भारत में निजी क्षेत्र की अग्रणी जनरल इंश्योरेंस कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को मध्य प्रदेश सरकार ने रबी, 2026 सीजन के लिए अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा (पूर्वी निमाड़) और खरगोन जिलों में ऋणी और गैर-ऋणी किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) लागू करने के लिए अधिकृत किया है। पीएमएफबीवाई योजना में किसानों को सूखा, बाढ़, अकाल, लैंडस्लाइड, चक्रवात, तूफान, तूफानी बारिश, सैलाब, कीटों, बीमारियों और अन्य बाहरी खतरों के कारण फसल को होने वाले नुकसान से बीमा की सुरक्षा मिलती है। फसल के नुकसान का आकलन करने के लिए, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की योजना बनाकर उसका संचालन करेगी। यदि सीसीई में पैदावार के आँकड़े कम पाए गए, तो माना जाएगा कि किसान को फसल का नुकसान हुआ है, और इस नुकसान के लिए उसे क्लेम दिया जाएगा।इस योजना के अंतर्गत फसल चक्र के हर चरण के लिए बीमा कवर मिलेगा, जिसमें बुआई से पहले, कटाई और कटाई के बाद के जोखिम भी शामिल हैं। पीएमएफबीवाई योजना के अंतर्गत आने वाले सभी उत्पाद मध्य प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से अनुमोदित हैं। अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा (पूर्वी निमाड़)और खरगोन जिलों के किसान अपने जिले के बैंक, कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) या अधिकृत एचडीएफसी इर्गो एजेंट से ऊपर सूचीबद्ध फसलों के लिए पीएमएफबीवाई योजना के अंतर्गत बीमा कवर प्राप्त कर सकते हैं। बीमा कवर प्राप्त करने की अंतिम तिथि एवं अन्य विवरण कृषि विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। यह योजना किसान ऐप पर लॉगऑन करके या वेबसाइट http-sÑ//pmfby.gov.in/farmerLogin पर सेल्फ-एनरोलमेंट कराके भी प्राप्त की जा सकती है।

ज़ी5 लाया है बच्चों के लिए नई सौगात

ज़ी5 पर बच्चों को बिना किसी चिंता के सुरक्षित, मज़ेदार और उनके पसंदीदा वीडियो उपलब्ध कराने वाले चद्वर्ल ने सदियों पुरानी कहानी पर आधारित एक नए एनिमेटेड शो, शिवलोक के कुंडक्का मंडक्का के लॉन्च के साथ बच्चों के कंटेंट पोर्टफोलियो को और मज़बूत किया है। जाने-माने लेखक, आनंद नीलकंठन की बच्चों के लिए लिखी गई और सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब 'द वेरी, एक्सट्रीमली, मोस्ट नॉटी असुरा टेल्स फॉर किड्स' पर आधारित शिवलोक के कुंडक्का मंडक्का के जरिए पुराणों कि उस दुनिया को स्क्रीन पर पेश किया गया है।जिनकी चुलबुली शरारतें उन्हें हिम्मत, दोस्ती और नई सीख से भरे एक अनोखे सफ़र पर ले जाती हैं। रामायण और महाभारत की जानी-पहचानी कहानियों से अलग, पौराणिक कथाओं की एक अनोखी दुनिया पर आधारित यह सीरीज़ बच्चों और उनके परिवारों को भारत की सदियों पुरानी परंपरा से जुड़े नए किरदारों, अनदेखी दुनिया और जादुई रोमांच से रूबरू कराती है।हंसी-मज़ाक, एक्शन और शानदार एनीमेशन के बेहतरीन तालमेल से बनी यह सीरीज आज के बच्चों के लिए पौराणिक कहानियों को नए अंदाज़ में पेश करती है, और यह सीख भी देती है कि कोई इंसान अपनी कमियों या खूबियों से नहीं, बल्कि सही समय पर सही फैसला लेने से हीरो बनता है।यह बच्चों को भारत की पौराणिक कहानियों को एक ऐसे नज़रिए से देखने का मौका देती है कुंडक्का और मंडक्का के कारनामों को देखते हुए बच्चों को यह समझ आएगा कि, हर चीज के बारे में जानने की चाहत रखने वाला शरारती बच्चा भी दयालु, बहादुर और दूसरों की मदद करने वाला हो सकता है।KidZ के ज़रिये, ज़ी 5 बच्चों और उनके परिवारों के लिए एक ऐसा सुरक्षित, उम्र के हिसाब से सही और भरोसेमंद प्लेटफॉर्म बना कर रहा है, जहाँ भारतीय संस्कृति से जुड़े और आज के दौर के हिसाब से तैयार किए गए बेहद मनोरंजक कंटेंट उपलब्ध हों। साथ बैठकर देखने के लिए बनाई गई यह सीरीज बच्चों और माता-पिता को ऐसी कहानियों से जोड़ती है, जो मनोरंजन करने के साथ-साथ अच्छे संस्कारों को भी बढ़ावा देती हैं। शिवलोक के कुंडक्का मंडक्का छह भाषाओं - यानी हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बांग्ला और अंग्रेजी में उपलब्ध होगी।

प्रेम केवल कहने से नहीं बल्कि निभाने से सिद्ध होता हैं

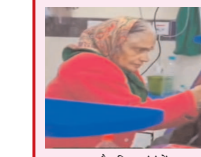

आजकल वैवाहिक संबंधों का बनना-टूटना तो जैसे गुड्डे-गुड़ियों का खेल हो गया है जबकि हमारी संस्कृति में पति-पत्नी का संबंध केवल सामाजिक या वैधानिक बंधन नहीं,बल्कि दो आत्माओं का ऐसा मिलन है जो जीवन की हर परिस्थिति में एक-दूसरे का संबल बनता है क्योंकि यह कोई सौदेबाजी न होकर पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक ही होते हैं।जहां एक की कमी होती है वहां दूसरा उसे पूरा करता है और यही पूरकता इस रिश्ते की सबसे बड़ी खूबसूरती है।बेशक जीवन के प्रारंभिक वर्षों में यह संबंध आकर्षण,उत्साह और सपनों से भरा होता है लेकिन जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है , और सच कहा जाए तो यह रिश्ता अपने सबसे सुंदर रूप में होता है।इस समय शब्दों से ज्यादा खामोशी बातें करती है और हर अवसर पर एक दूसरे के लिए निःस्वार्थ उपस्थिति ही सबसे बड़ा सुकून बन जाती है।किसी ने ठीक ही कहा है कि प्रेम केवल कहने से नहीं बल्कि निभाने से सिद्ध होता है और तब कहा जा सकता है कि जीवन में धन-दौलत,प्रतिष्ठा और सफलता सब कुछ हो सकता है लेकिन यदि जीवनसाथी का सच्चा साथ न हो तो यह सब अधूरा ही है।इस तरह के दृश्य हमें सिखाते है कि सच्चा प्रेम केवल साथ रहने में नहीं बल्कि हर परिस्थिति में साथ निभाने में है। फिर चाहे वह यौवन का उत्साह हो या बुढ़ापे की शांति और यही इस रिश्ते की सच्ची सार्थकता और सबसे बड़ी खूबसूरती है.....

मनोज अरुण व्यास

रक्त में संचार करता एक अनुभव और

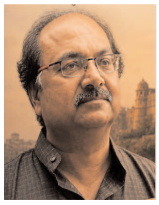

जेब में रखा मोबाइल जब घनघनाया तो सुरेन्द्र ने निकालकर देखा. फोन आईसीयू से आया था. उन्हें थोड़ा आश्चर्य हुआ. थोड़ी देर पहले ही वह आईसीयू में मरीज और डॉक्टर दोनों से मिलकर आए थे. आधे घंटे बाद उन्हें कॉल करने का मतलब? सैकड़ों विचार रास्ते भर प्रश्न के रूप में उनके दिमाग में घुमड़ने लगे. वह अविलंब औपचारिकताओं का निर्वहन कर आई.सी.यू. में प्रविष्ट हुए. ड्यूटी डॉक्टर बदल गए थे.उन्होंने दो टेस्ट ट्यूब देते हुए कहा - आप इन्हें लेकर नीचे ब्लड बैंक में चले जाएं,

सुरेन्द्र ने पूछा- करना क्या है?

- वही आपको बता देंगे ,आप ले तो जाएं. गोलमोल ,अस्पष्ट सा उत्तर फिर उनकी तरफ आ गिरा.

अनहोनी की आशंका में आई.सी.यू. के बाहर खड़े अपने पुत्र को लेकर वह ब्लड बैंक पहुंचे. ब्लड बैंक के इन्चार्ज नरेश गोयल ने बड़ी आत्मीयता से उनकी बात सुनी और जानकारी दी कि आपकी पत्नी को एक यूनिट ब्लड चढ़ाया जाना है. यह ब्लड सैम्पल केवल ब्लड ग्रुप की जानकारी के लिए और ब्लड मैच करने के लिए भेजे गए हैं. यह कहकर वह ब्लड ग्रुप की जांच करने चले गए और आते ही बोले ए बी प्लस है. आपका डोनर कहां है.? अब पराये शहर में अनायास ब्लड देने के लिए किससे कहें? एकदम, तुरत फुरत ,हाथों हाथ -कुछ समझ नहीं आया .थोड़ी देर विचार करने के बाद वह बोले -आपके पास स्टॉक में इस ग्रुप का ब्लड हो तो आप भिजवा दें .मैं शाम तक आपके पास इसी ग्रुप का या अन्य किसी ग्रुप का एक यूनिट ब्लड उपलब्ध करा दूंगा. जवाब आशा के विपरीत था. उन्होंने एकदम हाथ झाड़ कर कहा -इस ग्रुप की एक भी यूनिट हमारे पास नहीं है. यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप ब्लड मरीज को चढ़ाने के लिए कब कितनी देर में उपलब्ध कराते हैं. यह सुनकर सुरेन्द्र हतप्रभ रह गए. अनायास पास खड़े जवान बेटे का बोध हुआ .उन्होंने उसका और अपना ब्लड ग्रुप परीक्षण करने का अनुरोध किया. संयोगवश बेटे का ब्लड ग्रुप मैच कर गया और उसने बिना किसी तनाव या हिचक के दे भी दिया.मां के लिए तनाव या हिचक कैसी ?रक्त रक्त में ही तो मिल रहा था. ब्लड बैंक के प्रभारी ने कहा - ठीक है बस थोड़ी ही देर में ऊपर भिजवा देता हूँ. दोपहर बारह बजे आई.सी.यू. में मरीजों से मिलने के निर्धारित समय पर सुरेन्द्र वहां पहुँचे तो उनकी पत्नी को ग्लूकोज़ की सामान्य बोतल चढ़ाई जा रही थी. डॉक्टर से पूछने पर उसने बताया कि ब्लड अभी ब्लड बैंक से आया नहीं है ,जैसे ही आएगा हम मरीज को चढ़ा देंगे. आई.सी.यू. से बाहर आकर सुरेन्द्र ने अपने पुत्र को ब्लड बैंक के प्रभारी के पास भेजा जो दो घंटे पहले एक ही बिरादरी का दम भरते हुए पच्चीस तरह की नाटक-नौटंकी कर रहा था. बेटे ने लौटकर बताया कि अंकल कह रहे हैं कि ब्लड अभी बहुत ठंडा है .थोड़ा नॉर्मल हो जाने दो .यह सुनकर सुरेन्द्र का माथा ठनका. वह समझ गए कि उनसे झूठ बोला गया है. ब्लड बैंक में उस ग्रुप का ब्लड पहले से था और उनके बेटे से जो लिया गया वह ब्लड बैंक में भविष्य में अन्य किसी मरीज के लिए सुरक्षित रख दिया गया है.

उनकी पत्नी को जो ब्लड चढ़ाया जाएगा वह अन्य किसी व्यक्ति का है इसीलिए ब्लड बैंक से निकाल कर उसके सामान्य तापक्रम पर आने का इंतजार किया जा रहा है.

उस दिन रात्रि आठ बजे उन्होंने आई.सी.यू. में अपने पुत्र को न भेजकर स्वयं जाने का निर्णय लिया. उन्होंने पेसेंट रिकॉर्ड की फाइल खोली तो उस तारीख में दोपहर तीन बजे खून देने का विवरण दर्ज था और देने वाले का रजिस्टर क्रमांक व दिनांक की पर्ची चिपकी हुई थी. उसे देखकर उनकी आशंका सच साबित हुई. जो ब्लड उनकी पत्नी को चढ़ाया गया था वह उसके भर्ती होने से आठ दिन पहले किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया था. उन्होंने रजिस्टर क्रमांक याद कर दूसरे दिन उसकी जानकारी लेने का निर्णय लिया और बाहर चले आए. दूसरे दिन उठते ही वह ब्लड बैंक पहुँचे. संयोगवश पिछले दिन वाले उनकी बिरादरी के 'सज्जन पुरुष' वहां नहीं थे. उन्होंने महिला प्रभारी से इधर-उधर की बात कर रजिस्टर निकलवाया .उसमें दर्ज उस क्रमांक पर उस व्यक्ति का नाम पता देखा. तारीख वही थी और उस दिनांक को इस ग्रुप का एक ही ब्लड दिया गया था. उन्हें यह देखकर अफसोस हुआ कि उनसे झूठ बोला गया.भविष्य में फिर किसी आकस्मिक परिस्थिति से बचने के लिए स्थानीय परिचितों से एक यूनिट ब्लड की व्यवस्था कर अग्रिम रूप से वहां जमा करा दिया क्योंकि एक बार देने के बाद बेटा अगले तीन माह तक पुनः खून नहीं दे सकता था और उनका बलड ग्रुप उससे अलग था. चार दिन बाद वही स्थिति बनी तो उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि उनका एक यूनिट ब्लड जमा है आप ब्लड बैंक से मंगवा लें. ब्लड बैंक द्वारा उस दिन जो खून दिया गया था उसकी पर्ची पर वही तारीख अंकित थी जो उनके पुत्र द्वारा ब्लड देने की थी. दूसरे दिन फिर उन्होंने ब्लड बैंक में उस नंबर की खोज की और यह देखकर संतोष हुआ कि उनके पुत्र द्वारा दिया गया खून अब उनकी पत्नी के शरीर में दौड़ रहा है. वह अचंभित हुए .अस्पताल प्रबंधन द्वारा उस समय झूठ बोलने का कोई तर्क उनकी समझ में नहीं आया. वह उस दिन भी स्पष्ट रूप से कह सकते थे कि हमारे पास इस ब्लड ग्रुप की एक ही यूनिट है और आपको एक यूनिट आपात स्थिति के लिए रिज़र्व में रखने आपको उपलब्ध कराना ही होगा. वह बिना कुछ कहे बाहर आ गए. निजी चिकित्सालयों के प्रबंधकों की मजबूरी को समझते हुए ,जीवन में होने वाले नित नये अनुभवों की तरह उन्होंने इसे भी एक नए अनुभव के रुप में सहजता से स्वीकार कर लिया. ग्यारहवें दिन आई.सी.यू. से बाहर आने और कमरे में शिट होने के बाद उन्हें दवाओं की पर्ची मिलने लगी. आजकल हर चिकित्सालय में चिकित्सालय परिसर में ही संस्थान की ओर से उनकी अपनी दवा की दुकान होती है जहां से दवा लेना, कम से कम उस संस्थान में भर्ती मरीज के परिजनों के लिए अनिवार्य जैसा होता है. वैसे भी संकट में घिरा आदमी निकट ही संकटमोचक की तलाश करता है.

सुरेन्द्र भी अपनी दवा की पर्ची लेकर पहुंचे, मगर बिल देखते ही भड़क उठे. दो साल पहले तक वह अपना फालतू समय काटने के लिए अपने एक मित्र ललित मोहन की दवा की दुकान पर बैठते थे. उनकी दुकान जिला चिकित्सालय के पास में थी इसलिए वहां हर तरह के पर्चे आते रहते थे.साधारण गोलियों से लेकर ग्लूकोस की बोतलों और सर्जिकल उपकरणों तक. जब मित्र के पुत्र समय पर दुकान पर नहीं आते थे तो वह उनकी मदद करते रहते थे. उस दौरान उन्हें हर दवा और उसके क्रय-विक्रय मूल्य की जानकारी हो गई थी. उनके भड़कने का यही एक कारण था. उन्हें ग्लूकोस और आर.एल. (रिंगर लेक्टेट)की बोतलों के साथ उन्हें चढ़ाने वाली नली जिसे आई. वी. सेट कहते हैं ,लिखी गई थी. उन्होंने देखा कि आर.एल.की बोतल मुद्रित अधिकतम मूल्य के अनुसार अट्ठहर रुपये की लगाई थी.उस पर पांच प्रतिशत स्थानीय प्रादेशिक कर लगाया गया. उस पर चैदह प्रतिशत केन्द्र शासन का सेवाकर था. जबकि उस कंपनी की आर.एल.की बोतल को उन्होंने बीस बाईस रुपये की रेंज में अपने मित्र की दुकान से विक्रय किया था. ग्लूकोस पांच प्रतिशत की बिलिंग भी इसी तरह की गई थी. हद तो यह थी कि बोतल चढ़ाने का सेट छियानबे रुपये का था जो कि कर मिलाकर एक सौ उनके रुपये का पड़ रहा था. जबकि उसका वास्तविक मूल्य सात आठ रुपये से अधिक नहीं था. कीमतों में इतना भारी अंतर उन्हें उद्वेलित कर बैठा. उन्होंने दुकान संचालक के रुप में अस्पताल प्रबंधन द्वारा नियुक्त व्यक्ति से कुछ कहने की कोशिश की तो उसने जल्दी-जल्दी करिये,कहकर पैसे देने को मजबूर कर दिया. वह उस सामान को लेकर रूम में गये और नर्स को सौंपकर कुछ देर के लिए निश्चिंत हो गए. उस समय पैसा उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना समय पर दवाइयां मिलना और उससे भी बड़ी बात थी उनके मरीज के स्वास्थ्य में उत्तरोतर प्रगति की संभावना. ठंडे दिमाग से उन्होंने सोचा-सभी निजी चिकित्सालयों में यही होता होगा. शासकीय कर्मचारियों की तरह आखिर उन्हें भी अपनी निश्चित आमदनी के साथ आमदनी के अन्य स्त्रोतों की खोज करना भी जरूरी होता है.

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल
स. नई ग़ज़ल सदर बाजार
शिवपुरी म.प्र. 473551
मो.9407511924

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2026: भारत के लिए एक चेतावनी, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता

22.46 अंक और 176वीं रैंक—पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2026 का यह परिणाम केवल आँकड़ा नहीं, बल्कि भारत के पर्यावरणीय भविष्य पर एक गंभीर चेतावनी है।आज के समय में किसी भी देश की प्रगति केवल उसकी जीडीपी, एक्सप्रेस-वे, डिजिटल अर्थव्यवस्था या आर्थिक विकास दर से नहीं आँकी जाती। दुनिया अब यह भी देखती है कि कोई राष्ट्र अपने नागरिकों के स्वास्थ्य, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की रक्षा कितनी प्रभावी ढंग से कर रहा है। यही कारण है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा जारी विभिन्न वैश्विक सूचकांक आज देशों के समग्र विकास के महत्वपूर्ण संकेतक बन चुके हैं।

भारत विश्व की सबसे तेज़ी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर डिजिटल क्रांति तक, आधारभूत संरचना से लेकर वैश्विक कूटनीति तक, भारत ने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। लेकिन विकास का दूसरा पक्ष भी है, जिस पर समय-समय पर विभिन्न वैश्विक सूचकांक हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। मानव विकास, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार और पर्यावरण जैसे सूचकांक यह बताते हैं कि आर्थिक प्रगति के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

इसी संदर्भ में हाल ही में जारी पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (Environmental Performance Index&-EPI) 2026 भारत के लिए एक गंभीर संदेश लेकर आया है। येल और कोलंबिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में प्रकाशित यह सूचकांक विश्व के देशों का मूल्यांकन तीन प्रमुख आधारों–पर्यावरणीय स्वास्थ्य , पारिस्थितिकी तंत्र की जीवंतता और जलवायु परिवर्तन शमन –पर करता है।इस वर्ष भारत का कुल EPI स्कोर मात्र 22.46 (100 में से) रहा है, जबकि शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले एस्टोनिया का स्कोर 74.79 है। भारत को 177 देशों में 176वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। इससे भी अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि दक्षिण एशिया के आठ देशों में भी भारत सबसे अंतिम स्थान पर रहा।

22.46 अंक... अर्थात् हम प्रतीकात्मक रूप से 'पास' भी नहीं हुएवादि इस परिणाम को हम एक सामान्य परीक्षा के संदर्भ में देखें, तो यह सोचने पर विवश करता है। हमारे देश में विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की अधिकांश परीक्षाओं में 33 प्रतिशत अंक न्यूनतम उत्तीर्णांक माने जाते हैं। जबकि इस वैश्विक पर्यावरणीय मूल्यांकन में भारत का स्कोर 22.46 है। यह तुलना केवल एक प्रतीकात्मक रूपक है, क्योंकि श्वद्धु की मूल्यांकन प्रणाली अलग है, लेकिन यह हमें यह अवश्य बताती है कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में हमारी यात्रा अभी बहुत लंबी है।रैंकिंग केवल संख्या नहीं होती; वह दुनिया के सामने किसी देश की पर्यावरणीय स्थिति का एक संकेत भी होती है। इसलिए इस परिणाम को हल्के में लेना उचित नहीं होगा। यह केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं है। वायु प्रदूषण आज सार्वजनिक स्वास्थ्य का सबसे बड़ा संकट बन चुका है। दूषित हवा हमारे फेफड़ों से लेकर अर्थव्यवस्था तक को प्रभावित कर रही है। जल प्रदूषण, घटते वन, सिकुड़ती जैव विविधता और बढ़ती जलवायु आपदाएँ यह संकेत देती हैं कि प्रकृति का संकट अब सीधे मानव जीवन का संकट बन चुका है।

क्या केवल सूचकांक को नकार देना पर्याप्त है?

वर्ष 2022 में भारत सरकार ने श्वद्धु की कार्यप्रणाली पर गंभीर आपत्तियाँ जताते हुए इसके निष्कर्षों को स्वीकार नहीं किया था। सरकार का तर्क था कि इसमें भारत जैसे विकासशील देशों की परिस्थितियों और प्रति व्यक्ति कम उत्सर्जन का समुचित आकलन नहीं किया गया। यह बहस अपनी जगह उचित है, लेकिन ऐसे वैश्विक सूचकांक विश्व समुदाय में किसी देश की पर्यावरणीय छवि भी निर्मित करते हैं। इसलिए आवश्यकता केवल इसकी आलोचना करने की नहीं, बल्कि उन वास्तविक पर्यावरणीय चुनौतियों पर प्रभावी ढंग से कार्य करने की भी है, जिनकी ओर यह संकेत करता है

तस्वीर का दूसरा पक्ष भी देखना होगा

पिछले एक दशक में भारत ने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय पहलें की हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मिशन द्धत्रश्च ने पर्यावरण संरक्षण को जन-जीवन से जोड़ने का प्रयास किया है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना, राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन, नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का तीव्र विस्तार, 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान तथा वर्ष 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य भारत की वैश्विक पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। इन पहलों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापक सराहना हुई है।

इतना ही नहीं, श्वद्धु रिपोर्ट स्वयं यह स्वीकार करती है कि पिछले दस वर्षों में भारत के पर्यावरणीय प्रदर्शन में +7.47 अंकों का सुधार हुआ है। अर्थात् प्रयास हो रहे हैं और उनका प्रभाव भी दिखाई दे रहा है।

यहीं सबसे बड़ी चुनौती है

हाल ही में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। आज भारत लगभग 150 करोड़ लोगों का घर है, जबकि हमारे पास विश्व के कुल भू-भाग का केवल 2.4 प्रतिशत हिस्सा है। इतनी विशाल आबादी को स्वच्छ हवा, सुरक्षित पेयजल और स्वस्थ पर्यावरण उपलब्ध कराना किसी भी सरकार के लिए बड़ी चुनौती है।

दुर्भाग्य से आज भी पर्यावरण हमारे लोकतांत्रिक विमर्श का

केंद्रीय मुद्दा नहीं बन पाया है। हमारी चुनावी राजनीति प्रायः मुफ्त योजनाओं (फ्रीबीज), तात्कालिक वादों और अल्पकालिक मुद्दों के इर्द-गिर्द केंद्रित रहती है, जबकि स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल, कचरा प्रबंधन, हरित शहर और जलवायु परिवर्तन जैसे जीवन से जुड़े प्रश्न शायद ही कभी चुनावी बहस का हिस्सा बनते हैं। जब तक पर्यावरण जन-प्राथमिकता नहीं बनेगा, तब तक नीतिगत परिवर्तन भी अपेक्षित गति नहीं पकड़ पाएँगे।भारत को अब केवल सरकारी योजनाओं की नहीं, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय पर्यावरण जन-आंदोलन की आवश्यकता है, जिसमें सरकार और समाज दोनों समान भागीदार हों।

निष्कर्ष: रैंकिंग नहीं, भविष्य का प्रश्न

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2025 को न तो अंतिम सत्य मानने की आवश्यकता है और न ही पूरी तरह खारिज करने की। इसे आत्ममंथन और सुधार के अवसर के रूप में देखना चाहिए। भारत के पास राजनीतिक इच्छाशक्ति, वैज्ञानिक क्षमता, युवा शक्ति और वैश्विक स्तर पर सराही गई अनेक पर्यावरणीय पहलें हैं। अब इन्हें जनभागीदारी से जोड़ते हुए पर्यावरण को विकास की मुख्यधारा में लाना होगा। आखरिकार, आने वाली पीढ़ियाँ हमें हमारी जीडीपी से कम और उस पृथ्वी से अधिक याद रखेंगी, जिसे हम उनके लिए छोड़कर जाएँगे। इसलिए प्रश्न केवल भारत की रैंकिंग का नहीं, बल्कि भारत के भविष्य का है।

प्रो. अशोक कुमार,
USA, चेयरमेन:ग्लोबल फाउंडेशन फॉर अडवांसमेंट ऑफ एंवीरोंमेंट एंड हृमन् वेलनेस, यूएसए, ह्र.
2. निरंजन देव भारद्वाज
पर्यावरणविद्, लेखक एवं जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ

स्त्री अस्मिता पर अंगुली अर्थात कुल का सम्पूर्ण नाश

दुर्योधन ने उस अबला स्त्री को दिखा कर अपनी जंघा ठोकी थी, तो उसकी जंघा तोड़ी गयी। दुःशासन ने छाती ठोकी तो उसकी छाती फाड़ दी गयी।महारथी कर्ण ने एक असहाय स्त्री के अपमान का समर्थन किया, तो श्रीकृष्ण ने असहाय दशा में ही उसका वध कराया। भीष्म ने यदि प्रतिज्ञा में बंध कर एक स्त्री के अपमान को देखने और सहन करने का पाप किया, तो असँख्य तीरों में बिंध कर अपने पूरे कुल को एक-एक कर मरते हुए भी देखा...।।भारत का कोई बुजुर्ग अपने सामने अपने बच्चों को मरते देखना नहीं चाहता, पर भीष्म अपने सामने चार पीढ़ियों को मरते देखते रहे। जब-तक सब देख नहीं लिया, तब-तक मर भी न सके... यही उनका दण्ड था। धृतराष्ट्र का दोष था पुत्रमोह, तो सौ पुत्रों के शव को कंधा देने का दण्ड मिला उन्हें। सौ हाथियों के बराबर बल वाला धृतराष्ट्र सिवाय रोने के और कुछ नहीं कर सका। दण्ड केवल कौरव दल को ही नहीं मिला था। दण्ड पांडवों को भी मिला। द्रौपदी ने वरमाला अर्जुन के गले में डाली थी, सो उनकी रक्षा का दायित्व सबसे अधिक अर्जुन पर था। अर्जुन यदि चुपचाप उनका अपमान देखते रहे, तो सबसे कठोर दण्ड भी उन्ही को मिला। अर्जुन पितामह भीष्म को सबसे अधिक प्रेम करते थे, तो कृष्ण ने उन्ही के हाथों पितामह को निर्मम मृत्यु दिलाई।अर्जुन रोते रहे, पर तीर चलाते रहे... क्या लगता है, अपने ही हाथों अपने अभिभावकों, भाइयों की हत्या करने की ग्लानि से अर्जुन कभी मुक्त हुए होंगे क्या ? नहीं... वे जीवन भर तड़पे होंगे। यही उनका दण्ड था। युधिष्ठिर ने स्त्री को दाव पर लगाया, तो उन्हें भी दण्ड मिला। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और धर्म का साथ नहीं छोड़ने वाले युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में झूठ बोला, और उसी झूठ के कारण उनके गुरु की हत्या हुई। यह एक झूठ उनके सारे सत्यों पर भारी रहा... धर्मराज के लिए इससे बड़ा दण्ड क्या होगा ? दुर्योधन को गदायुद्ध सिखाया था स्वयं बलराम ने। एक अधर्मी को गदायुद्ध की शिक्षा देने का दण्ड बलराम को भी मिला। उनके सामने उनके प्रिय दुर्योधन का वध हुआ और वे चाह कर भी कुछ न कर सके... उस युग में दो योद्धा ऐसे थे जो अकेले सबको दण्ड दे सकते थे, कृष्ण और बर्बरीक। पर कृष्ण ने ऐसे कुकर्मियों के विरुद्ध शस्त्र उठाने तक से इनकार कर दिया, और बर्बरीक को युद्ध में उतरने से ही रोक दिया।

लोग पूछते हैं कि बर्बरीक का बलिदान हुआ?

यदि बर्बरीक का बलिदान नहीं हुआ होता तो द्रौपदी के अपराधियों को यथोचित दण्ड नहीं मिल पाता। कृष्ण युद्धभूमि में विजय और पराजय तय करने के लिए नहीं उतरे थे, कृष्ण द्रोपदी के अपराधियों को दण्ड दिलाने उतरे थे।छ लोगों ने कर्ण का बड़ा महिमामण्डन किया है। पर सुनिए! कर्ण कितना भी बड़ा योद्धा क्यों न रहा हो, कितना भी बड़ा दानी क्यों न रहा हो, एक स्त्री के वस्त्र-हरण में सहयोग का पाप इतना बड़ा है कि उसके समक्ष सारे पुण्य छोटे पड़ जाएंगे। द्रौपदी के अपमान में किये गये सहयोग ने यह सिद्ध कर दिया कि वह अक्षम्य व्यक्ति था, और उसका वध ही धर्म था।

'स्त्री कोई वस्तु नहीं कि उसे दांव पर लगाया जाए... '

कृष्ण के युग में दो स्त्रियों को बाल से पकड़ कर घसीटा गया।

देवकी के बाल पकड़े कंस ने, और द्रौपदी के बाल पकड़े दुःशासन ने। श्रीकृष्ण ने स्वयं दोनों के अपराधियों का समूल नाश किया।

एक निश्चित समय पर किसी स्त्री के अपमान का दण्ड दोषी व्यक्ति और उसके निर्दोष कुल के समूल नाश से ही पूरा होता है, भले वह व्यक्ति विश्व का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति ही क्यों न हो।।

डॉ सुरेंद्र मीणा